IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"आधुनिकतावाद बनाम उत्तर–आधुनिकतावाद : हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में"

हेमा जोशी (अनुसंधित्सु)

डी.एस. बी. कैम्पस, कुमाऊं विश्वविद्यालय,

नैनीताल, उत्तराखंड

सारांश – आधुनिकता जहाँ सार्वभौमिक मुक्ति की बात करती है, वहीं उत्तर–आधुनिकता प्रत्येक व्यक्ति की अपनी–अपनी मुक्ति के बारे में बात करती है। कई आलोचक विद्वान उत्तर–आधुनिकता को आधुनिकता के विपरीत मानते हैं। जहाँ आधुनिकता के अंतर्गत मानवीयता, जनतंत्रीकरण, न्याय, स्वाधीनता, मुक्ति, सत्य की खोज आदि प्रमुख तत्व सम्मिलित हैं वहीं पोस्ट–मॉर्डनिज्म कहता है कि जीवन जीने का केवल एक तरीका नहीं हो सकता। हमें सभी प्रकार के तरीकों का सम्मान करना चाहिए। आधुनिकता के प्रमुख घटक तत्वों में वैज्ञानिक बुद्धिवाद, तार्किकता, धर्म–निरपेक्षता, प्रगति की अवधारणा आदि तत्व सम्मिलित हैं। आधुनिकता को कोई प्रक्रिया मानता है तो कोई विचार–दृष्टि तो कोई विचारधारा तो कोई पद्धति और कोई इसे मूल्य मानता है। वास्तव में आधुनिकता क्या है? रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में कहें तो 'आधुनिकता एक प्रक्रिया का नाम है जो अंधविश्वासों से बाहर निकलने की प्रक्रिया है।' वहीं उत्तर–आधुनिकता विचारधारा का अंत, लेखक की मृत्यु, इतिहास का अंत, कला का अंत, आलोचक की मृत्यु, मनुष्य की मृत्यु आदि अनेक मृत्युओं की घोषणा करती है।

बीज शब्द – आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता, लघु–आख्यान (स्मॉल नैरेटिव), महान–आख्यान (ग्रेट नैरेटिव), लांग, पैरोल, हाईपररियलिटी, डिस्कोर्स, डाईलैक्टिक।

प्रस्तावना– 'आधुनिकता' और 'उत्तर–आधुनिकता' दोनों ही महत्वपूर्ण पद हैं और साथ ही जटिल पश्चिमी प्रत्यय भी। इनकी अनेक विद्वानों द्वारा समय–समय पर अपने मतानुसार परिभाषाएँ दी गई तथा इन पदो की कई अंतर्विरोधी विवेचनाएं भी होती रही हैं। आधुनिकतावाद के मतावलंबियों ने नवीन से नवीन सर्जन हेतु प्रयोग को अपना मूल्य बनाया। हर क्षण कुछ नया करने, रचने, कुछ विलक्षण प्रस्तुत करने पर विशेष ध्यान दिया। "रूप, शिल्प तथा शैली के नित नए प्रयोग साहित्यिक आधुनिकतावाद की विशेषता हैं। नई भाषा, नई संरचना, नई शब्दावली, पुराने प्रचलित शब्दों का नया अर्थ, नई साहित्यिक पदावली की झलक आदि आधुनिकतावादी साहित्य की पहचान बन गई।"[1]

उत्तर–आधुनिकतावाद में विज्ञान का स्थान अनुभव ने, योजना का स्थान बाजार ने, धर्मनिरपेक्षता का स्थान धार्मिक पहचान ने, तथा केंद्र का स्थान विकेंद्रीकरण (डी–कंस्ट्रक्शन) ने ले लिया। ग्रैंड नैरेटिव्स का स्थान, स्मॉल नैरेटिव्स (दलित, स्त्री, आदिवासी विमर्श) ने ले लिया।

आधुनिकता – आधुनिक, आधुनिकता, आधुनिकीकरण और आधुनिकतावाद इन चारों शब्दों में भिन्नता है। अंग्रेजी भाषा में 'आधुनिक' के लिए मॉडर्न(modern), 'आधुनिकता' के लिए मॉडर्निटी(modernity), 'आधुनिकीकरण' के लिए मॉर्डनाइजेशन (modernization) और 'आधुनिकतावाद' के लिए मॉर्डनिज्म (modernism) शब्द का प्रयोग किया जाता है। हिंदी साहित्य में आधुनिकतावाद का समय हम अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर–एक जीवनी' के प्रकाशन के साथ मान सकते हैं। यह कृति वर्ष 1941 में प्रकाशित हुई थी। परन्तु सही अर्थों में इसका प्रारंभ वर्ष 1960 से माना जाता है क्योंकि तब से ही इसने एक आंदोलन का रूप धारण किया। "विचारकों ने अलग–अलग देशों में आधुनिकतावाद के विकास का अलग–अलग समय निश्चित किया है। हिंदी में आधुनिकतावाद के उदय को लेकर अनेक प्रकार के मत प्रचलित हैं। पश्चिमी चिंतन से प्रभावित लोग उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों अर्थात भारतेंदु युग से आधुनिकता का उदय मानते हैं और कुछ लोग आधुनिकतावाद का संबंध प्रयोगवाद और नई कविता से जोड़ते हैं। कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि हिंदी में आधुनिकतावाद का जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में उत्पन्न नवीन संवेदना और नई चिंतन दृष्टि के साथ हुआ। आधुनिकता और आधुनिकतावाद

शब्दों के अंतर पर ध्यान देना जरूरी है। जब हम कहते हैं कि भारतेंदु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार है तब आधुनिकता से हमारा अर्थ होता है नवीन वैज्ञानिक तर्क युक्त दृष्टिकोण। जो रूढ़िबद्धता के विरोध में खड़ा है और जब आधुनिकतावाद के उदय की बात करते हैं तब आशय विश्वयुद्धों के बाद जन्मी संवेदना और विचार दृष्टि से होता है।"[2]

"यह परंपरा, इतिहास, देशकाल से मुक्ति का आंदोलन कहा जाता है। किसी परंपरा से इसे जोड़ना भारी भ्रम है। यह अपने परिदृश्य से स्वयं संभूत है। लुकाच इसे अमूर्त, इतिहास–निरपेक्ष, तर्केतर और मिथकीय कहता है। टी.एस. इलियट अपने समय या युग को व्यर्थता और अराजकता का परिदृश्य कहता है।"[3]

"कुछ लोग आधुनिकतावाद को फासीवाद का समर्थक कहते हैं। जर्मनी के सुप्रसिद्ध कवि गॉड फ्रीडमैन को क्लाउमन फासीवादियों की श्रेणी में रखता है क्योंकि वह रूपवाद पर खासा जोर देता है। बाद में फासीवाद और रूपवाद में तालमेल बिठाकर उक्त मत को और भी विस्तार दिया गया। ऐसे लोगों में जेम्सोन, विंदमलेविस, फ्रैंक करमोड मुख्य हैं।"[4]

आधुनिकतावाद की प्रमुख विशेषताएं–

1) इतिहास, परंपरा और देश काल से मुक्ति

2) गहन स्वात्म चेतना

3) तटस्थता

4) प्रतिबद्धता

5) व्यक्ति स्वातंत्र्य

6) रूप और प्रयोग

7) अपारदर्शी भाषा

8) धर्म, प्रकृति, नैतिकता, आस्था मूल्य तथा प्रत्येक प्रचलित विचार और व्यवस्था को चुनौती देना।

9) कुछ नया अद्वितीय करने की प्रतिबद्धता।

10) नवीन इहलौकिक दृष्टिकोण

एजरा पाउंड जिनकी कृति 'द वेस्ट लैंड्स' को साहित्यिक आधुनिकता का मूल माना जाता है, ने यह तक कह दिया कि हम कभी भी बीस वर्ष पूर्व पुरानी शैली में एक अच्छी कविता नहीं लिख सकते। "आधुनिकतावादी साहित्यिक आंदोलन के अंतर्गत प्रतीकवाद, बिम्बवाद, दादावाद, अतियथार्थवाद, भविष्यवाद, अंतश्चेतनावाद आदि शामिल हैं। आधुनिकतावाद में दुरूहता तथा पाठकीय उपेक्षा के कारण इसका रचना विधान जटिल और अपरिचित लगने लगता है। परिणाम स्वरुप वह अर्थबोध तथा सौंदर्य–बोध से वंचित रह जाता है।"[5]

उत्तर–आधुनिकता – "उत्तर–आधुनिकता की पहली परिकल्पना अर्नाल्ड टॉयनबी ने की थी। उन्होंने अपनी पुस्तक 'ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री' (A STUDY OF HISTORY) में आज से 120 साल पूर्व 1850 ई. से 1857 ई. के बीच आधुनिक युग की समाप्ति की घोषणा की थी। उन्होंने 1918 से 1939 के बीच के समय के लिए उत्तर–आधुनिक शब्द का प्रयोग किया था। उनके अनुसार उत्तर–आधुनिकता के मसीहा नीत्से थे। लेकिन उत्तर–आधुनिक शब्द का चलन बाद में आया। एडोर्नो होर्खियार ने इसे नए दार्शनिक हथियार दिए। बाद में फ्रांसीसी दार्शनिक ल्योतार ने इसे एक स्थिति के रूप में स्थिर करने का प्रयास किया।" [6] "इतिहास में 'उत्तर–आधुनिक' विशेषण का पहला प्रयोग अमेरिकी उपन्यासकार जॉन वाथ्र ने 1967 में 'द लिटरेचर ऑफ एक्साशन' नामक प्रथम लेख में सार्थक ढंग से किया था। जबकि उत्तर–आधुनिक शब्द का प्रयोग सबसे पहले 1979 में ल्योतार ने किया था।"[7]

भारत में 1990 के आसपास पश्चिम से इस विचार की धमक हिंदी तक पहुंची। यह एक जटिल पद है। यह एक विचार न होकर कुछ विचारों का समुच्चय है। उत्तर–आधुनिकता से पहले का समय आधुनिकता का समय था।

उत्तर–आधुनिक समाज के केंद्र में पूंजीवाद है। एक मानव अपने हितों को साधने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। पूंजी ही उसके जीवन का मूल लक्ष्य बन गया है। पूंजी कमाने के तरीके, उसे संचित करने और उससे भौतिक सुखों की प्राप्ति की कामना में मनुष्य आज सही–गलत का भी भेद नहीं कर पाता है।

"एक चपरासी से लेकर अधिकारी तक, निजी से लेकर सरकारी तक, वकील से लेकर धर्माधिकारी तक, हो गए हैं सब भ्रष्ट, आम जनता है त्रस्त"[8]

उत्तर–आधुनिकता की विशेषताएं –

1) इसमें ज्ञान का आधार मानवता की आधुनिक चेतना को बताया गया है।

2) यह व्यक्ति या सामाजिक इकाइयों की स्वतंत्रता का पक्षधर है।

3) उत्तर–आधुनिकता आधुनिकता के पूर्णवादी रवैए का विरोध करती है।

4) यह महानता के स्थान पर सामान्यतया की बात करती है।

5) समग्रता का विखंडन करती है।

6) इसमें एक देश का सत्य पूरे विश्व का सत्य है।

7) यह व्यक्तिगत आस्थाओं को, विचारधाराओं को विज्ञान से जोड़ती है।

8) यह तार्किकता के अति उपयोग पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है। इसके अनुसार मनुष्य पूर्णतः स्वायत्त, उच्च एवं श्रेष्ठ है।

9) यह लघु वृतांत की बात करती है।

10) निजता (प्राइवेसी) की समाप्ति इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

आधुनिकता बनाम उत्तर–आधुनिकता – आधुनिकता का दौर 20वीं सदी का समय रहा है, जिसे हम महान आख्यानों का समय भी कह सकते हैं। उत्तर आधुनिकता का समय लगभग ईक्कीसवीं सदी का समय है। जिसमें महा–आख्यानों स्थान लघु आख्यानों ने ले लिया। यहां लघु–आख्यानों से तात्पर्य अस्मिता मूलक विमर्श (स्त्री, दलित, आदिवासी) से है। आधुनिकता के दौर का एक शब्द था 'डायलेक्टिक' यानि द्वन्द या बहस। उत्तर आधुनिक दौर में वह डिस्कोर्स यानि विमर्श हो गया। उत्तर–आधुनिकता के पहलुओं में बेहद दिलचस्प पहलू है, 'हाइपररियलिटी'। 'हाइपररियलिटी' एक ऐसी चीज है जिसके मूल में कुछ नहीं होता। कह सकते हैं कि 'हाइपररियल' फंतासी का नया विस्तार है। उत्तर–आधुनिकता के सबसे बड़े बौद्धिक जैक–देरीदा हुए। जिन्होंने भाषा और पाठ के सहारे बड़े राजनीतिक और सामाजिक आशय दुनिया के सामने रखे। उन्होंने 'विखंडनवाद' नामक एक पद दिया। 'विखंडनवाद' वस्तुस्थिति को उघाड़ देता है। 'ल्योतार' को 'उत्तर–आधुनिकतावाद' का जनक माना जाता है। 'उत्तर–आधुनिकता' की अवधारणा की उत्पत्ति के संबंध में दो मत प्रचलित हैं। पह्ला इस अवधारणा की उत्पत्ति यूरोप के 'रेनेसां' अर्थात् यूरोप में 'नवजागरण काल' से हुई है। दूसरा यह कि 'उत्तर–आधुनिकता' पद आधुनिकता के बाद की बात करता है।

*1924 में पैदा हुए 'ल्यूतेर' एक फ्रांसीसी विचारक थे। जिनका मुख्य कार्य 'द पोस्ट मॉर्डन कंडीशन' नामक एक पुस्तक के रूप में उपलब्ध है। यह किताब ना होकर एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। जिसमें उन्होंने कंप्यूटराइज्ड समाज की व्याख्या की है।

*ल्योतार ने आधुनिकता के बाद के इस नए कंप्यूटराइज्ड समाज पर शोध किया और उससे समकालीन संसार के विषय में कुछ निष्कर्ष निकाले। जिसे उन्होंने अपनी बुक 'द पोस्ट–मॉडर्न कंडीशन' में रखा। जो निम्नवत है–

1) अब ग्रेट नरेशन अर्थात महान आख्यान का जमाना नहीं रहा।

2) आधुनिकता का दौर महा आख्यानों का दौर रहा है। जिसमें बड़ी वैचारिकी थी, बड़ी सैद्धांतिकी थी। जहां साम्यवाद था, विज्ञान था, अस्तित्ववाद था। आधुनिकता के महान आख्यान थे। दरअसल अब वह महान आख्यानों का ज़माना नहीं रहा। यह कहते हुए उसने शीत युद्ध की व्यर्थता को बताया।

3) सत्ता के रूप में साम्यवाद के पतन को ल्योतार भाँप रहा था। अगर दुनिया में विशाल आख्यान का ह्रास हो गया तो शेष क्या रह गया? इस पर अपनी टिप्पणी देते हुए ल्योतार ने कहा कि अब लोकल नरेशन अर्थात स्थाई आख्यान रह गए हैं।

4) मेटा–नैरेशन अर्थात ईसाइयत, मार्क्सवाद और वैज्ञानिक प्रगति के विरुद्ध अब छोटे–छोटे अस्मिता समूह जैसे स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श आदि का उदय हो रहा है।

5) विज्ञान की महानता, तकनीकी क्षुद्रता में रिड्यूस हो गई है।

6) उत्तर–आधुनिकता कंप्यूटरीकृत समाज का ही अध्ययन है।

7) विज्ञान में नई मौलिक खोजें कम हुई हैं और जो खोजें हुई थी उनका तकनीकी रूप में कंप्यूटरीकरण हुआ है।

8) कंप्यूटर और नई सूचना प्रौद्योगिकी अब तकनीकी के सहारे पूरी दुनिया पर हावी है। 'इंटेलिजेंस' जो एक मानवीय व्यवहार है उसके लिए कंप्यूटरीकृत 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' को खोज लिया गया है।

9) ल्योतार ने कहा– 'संसार बहुलतावादी है। संसार में अनेक आवाजें हैं। इन सभी को संरक्षण देने की महती आवश्यकता है।'

निष्कर्ष – विभिन्न पक्षों के विश्लेषणात्मक अध्ययन करने से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आधुनिकता की सैद्धांतिकी जहाँ वस्तुनिष्ठता को लेकर चलती है वहीं उत्तर–आधुनिकता की सैद्धांतिकी व्यक्तिनिष्ठता को महत्व देती है। आधुनिकता एक ऐसी विचारधारा है, जो व्यक्ति को अधिक जागरूक एवं मानवीय दृष्टिकोण से जीने का सही मार्ग दिखाती है। यह परंपरा और रूढ़िवादिता पर आधारित ना होकर तार्किकता पर आधारित होती है। उत्तर–आधुनिकता तार्किकता पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती है। यह हाशिए के लोगों को अपने साथ लेकर चलती है। आधुनिकता के कालखंड से उत्तर–आधुनिकता तक की यात्रा में पूंजीवाद का स्थान बाजारवाद ने, मशीन का स्थान तकनीकी ने, सेल का स्थान मार्केटिंग ने, वस्तु का स्थान सेवा ने, उत्पादन का स्थान उपभोक्ता ने, महा–आख्यान का स्थान लघु–आख्यान ने ले लिया है। इन दोनों वैचारिकियों ने हिंदी साहित्य में अपना एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप प्रदर्शित किया है और हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया है। यह दोनों सैद्धान्तिकियां हिंदी साहित्य के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रहीं हैं।

सन्दर्भ –

1) डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृष्ठ–61

2) डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृष्ठ–60

3) बच्चन सिंह, हिंदी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, 1994, पृष्ठ– 21, 22

4) बच्चन सिंह, हिंदी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, 1994, पृष्ठ– 22

5) डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृष्ठ– 61

6) https://www.rachanakar.org >2007/03

7) https://www.rachanakar.org >2007/03

8) भूपेंद्र जायसवाल, हिंदी कविता, भ्रष्टाचार, अक्टूबर–2012